वर्ष-22 अंक-06 वि. स. 2083 युगाब्द 5128 अगस्त-2026 वार्षिक चंदा 250/- मूल्य प्रति - 25/-
RNIN-UPHIN/2005/15853 सदस्यता शुल्क : 10 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद



विजयनगर साम्राज्य के कीर्तिवान सम्राट
राजा कृष्णदेव राय

स्वास्थ्य-शिक्षा सेवा और जनजागरण को समर्पित

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

जुलाई 2026 की गतिविधियाँ

(सेवा कार्यों और गतिविधियों की जानकारी)

सहकार निवेदन

पिछले 32 वर्षों मे न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा किए जा रहे समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन, मुख्यतः आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. **सचल चिकित्सा सेवा** - रु. 11,000 की मासिक धनराशि - एक सेवा बस्ती मे निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण
2. **नेत्र चिकित्सा सेवा** - रु. 5000 की धनराशि - एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी के आपरेशन हेतु।
3. **दिव्यांग सहायता सेवा** - रु. 1,000 से 6,000 - एक दिव्यांग बन्धु के लिए कृत्रिम अंग व उपकरण की व्यवस्था
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)**- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि
5. **छात्रवृत्ति**- कक्षा के अनुसार वार्षिक छात्रवृत्ति - कक्षानुसार रु 3000 से रु 20 हजार प्रति छात्र
6. **सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका)** - रु. 2,000 की आजीवन (10 वर्षीय) सदस्यता या पत्रिका में विज्ञापन देकर
7. **सेवा संवाद (मासिक)** - रू. 2,000 की 10 वर्षीय एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता या पत्रिका में विज्ञापन देकर
8. **माधव सेवा आश्रम** - इस आश्रम के होने वाले भवन विस्तार में रु. 5,00,000 या अधिक का दान कर
9. **विश्राम सदन** - विश्राम सदनों में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 11,000 की सहायता
10. लखनऊ में निर्माणाधीन बालिका प्रकल्प के छात्रावास के निर्माण मे सहयोग हेतू अधिकाधिक आर्थिक सहयोग अपेक्षित है।
11. **अक्षय सेवा** - दिल्ली में एम्स एवं तीन अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 8,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. **CSR फंड (CSR00004454)** - यदि आपकी फर्म CSR के अंतर्गत भी दान करती है तो कृपया फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजे कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु करबद्ध अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें व करवाएं।

दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं:

- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें। **(FCRA # : 136550134)**
- चेक/ड्राफ्ट द्वारा जो **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो।
- **निम्न खातों में ऑनलाइन द्वारा आप राशि भेज सकते हैं।**
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - 29
    खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ
    खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - बैंक ऑफ़ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ
    खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)

कृपया, किसी भी माध्यम से राशि भेजने के तुरंत बाद स्क्रीन-शॉट (UTR #), एवं एक पत्र में अपना नाम, पता, मोबाइल, PAN के साथ उस प्रकल्प का नाम जिसके लिए दान दे रहे हैं (अपने लैटर-हेड या साधारण पेपर पर)- 9811068375 और bdsnyas.dl@gmail.com पर अवश्य भेजें। आपको 80G वाली रसीद भेज दी जाएगी।

सेवा संवाद में विज्ञापन देकर लाभ उठाएँ और न्यास का सहयोग करें

	एक अंक	12 अंक
आवरण		
अंतिम आवरण पृष्ठ :	50,000	5,00,000
आवरण पृष्ठ (2, 3) :	30,000	3,00,000
अन्दर के पृष्ठ		
पूर्ण पृष्ठ :	10,000	1,00,000
आधा पृष्ठ :	5,000	50,000
चौथाई पृष्ठ :	3,000	30,000
शुभकामना पंक्ति (1/8 भाग) :	2,000	20,000

पत्रिका का आकार : 20x30/8 इंच

विज्ञापन राशि का अग्रिम भुगतान अपेक्षित है।
कृपया यह राशि
सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)
बैंक ऑफ़ इंडिया, निराला नगर, लखनऊ
खाता संख्या **680610110000102**
IFSC-**BKID0006806** में जमा करायें।

यह पत्रिका न्यास के सभी दानदाताओं को भी भेजी जाती है।

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- पद्मश्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- सत्यप्रकाश मिश्र
- संदीप गुप्ता

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

पंजीकृत कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निराला नगर
लखनऊ-226020
0522-4001837, 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

Bhaorao Deoras Seva Nyas
B3/8, SF, Safdarjung Enclave,
N. Delhi-110029
E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
011-43306517, 9811068375

PAN : AAATB1049G
TAN : LKNB05081G
DELB30238F

आलोक : प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आप भी लिखें :

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन व सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

'पानीबाबा' : राजेन्द्र सिंह



जन्म - 6 अगस्त 1950

जल संरक्षण के लिए, संकल्पित गतिमान
पानी बाबा नाम से, हुए प्रसिद्ध महान।।
पानी बाबा कर रहे, लोक, राष्ट्र हित काम
जगप्रसिद्ध राजेन्द्र सिंह, तुम को नमन प्रणाम ।।

- शिव

यदि आप को मिल रही मुद्रित पत्रिका नहीं लेना चाहते तो कृपया सूचित करें।
आपकी मासिक पत्रिका **सेवा संवाद** का डिजिटल संस्करण पाने के लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी bdsnyas.dl@gmail.com पर भेजें।

अनुक्रमणिका

प्रकल्प/लेख	पृष्ठ
वर्तमान में चल रहे विश्राम सदन	5
अक्षय सेवा प्रकल्प	9
परमवीर चक्र विजेता मेजर परमेश्वरन	11
देवड़े नेत्र चिकित्सालय	12
महामना शिक्षण संस्थान	13
भाऊराव देवरस स्मृति छात्रवृत्ति	18
समर्थ भारत	19
हमारे ऋषि-महर्षि	23
हिन्दू जीवन पद्धति का क्रमबद्ध स्वरूप	24
पावन स्मृति	26
प्रकल्पों का डाटा	30
प्रकल्प एवं संपर्क सूत्र	32

अपनी बात



अगस्त : राष्ट्रचेतना, वन्दे मातरम् और गौरवशाली परम्पराओं का अमृत संदेश

अगस्त का महीना भारतीय जनमानस के लिए केवल वर्ष का एक कालखंड नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, आत्मगौरव, बलिदान और सांस्कृतिक चेतना का पावन पर्व है। यह वह काल है जब स्वतंत्रता की अमूल्य अनुभूति, राष्ट्रनिर्माताओं का त्याग और हमारी सनातन सांस्कृतिक परम्पराएँ एक साथ स्मरण कराती हैं कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत राष्ट्र-आत्मा है।

9 अगस्त का भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) हमें पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने के अदम्य संकल्प की प्रेरणा देता है, तो 15 अगस्त 1947 स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान और आत्मविश्वास का उद्घोष बनकर हमारे सामने उपस्थित होता है। अगस्त का प्रत्येक दिवस हमें स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता केवल प्राप्त करने की वस्तु नहीं, बल्कि उसे सतत् सशक्त, सुरक्षित और समृद्ध बनाए रखने का उत्तरदायित्व भी है।

इसी वर्ष राष्ट्रगीत "वन्दे मातरम्" की सार्वजनिक राष्ट्रीय यात्रा के 150 गौरवशाली वर्ष पूर्ण होने का अवसर भी हमारे लिए विशेष महत्त्व रखता है। महर्षि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह अमर गीत केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि मातृभूमि के प्रति अनन्य श्रद्धा, भक्ति और समर्पण का मंत्र है। स्वाधीनता संग्राम के अनगिनत सेनानियों ने "वन्दे मातरम्" का उद्घोष करते हुए यातनाएँ सही, कारावास स्वीकार किया और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण भी न्यौछावर कर दिए। यह गीत आज भी प्रत्येक भारतीय के हृदय में राष्ट्रप्रेम का दीप प्रज्वलित करता है।

अगस्त का महीना हमें अपनी गौरवशाली परम्पराओं का भी स्मरण कराता है। रक्षाबन्धन का पावन पर्व सामाजिक समरसता, पारिवारिक उत्तरदायित्व और सुरक्षा का संदेश देता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धर्म की स्थापना, अन्याय के प्रतिकार और कर्मयोग की प्रेरणा देती है। श्रावण मास की आध्यात्मिक साधना, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता तथा भारतीय जीवन-दृष्टि हमें बताती है कि राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी सीमाओं में नहीं, बल्कि उसके संस्कारों, संस्कृति और समाज की एकात्म चेतना में निहित होती है।

आज आवश्यकता है कि स्वतंत्रता का उत्सव केवल ध्वजारोहण तक सीमित न रहे, बल्कि प्रत्येक नागरिक अपने जीवन में कर्तव्यनिष्ठा, सेवा, स्वावलम्बन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रहित को सर्वोच्च स्थान दे। यही सच्ची राष्ट्रभक्ति है और यही "वन्दे मातरम्" की वास्तविक साधना भी।

"सेवा संवाद" का यह अंक अगस्त की इसी प्रेरणा को समर्पित है। आइए, हम अपने पूर्वजों के त्याग, स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और भारत की सनातन सांस्कृतिक परम्पराओं से शक्ति ग्रहण करते हुए एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें जो आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, समरस, संस्कारित और विश्वकल्याण के अपने शाश्वत ध्येय के प्रति निरंतर अग्रसर रहे।

- शिव

पिछले दिनों ग्लासगो में संपन्न हुए **2026 के राष्ट्रमंडल खेलों** में शानदार प्रदर्शन किया और कुल 39 पदक जीते। इनमें 13 स्वर्ण, 17 रजत और 9 कांस्य पदक हैं। पदक जीतने वाले कुछ खिलाड़ियों को बचपन में ही पोलियो हो गया था। एक मुक्केबाज ने तो 102 डिग्री बुखार में भी प्रतियोगिता में भाग लिया और देश के लिए स्वर्णपदक जीता।

पूरे देश में चलने वाले विश्राम सदन

देश के छः बड़े सरकारी अस्पतालों में रोगियों और उनके सहयोगियों को रहने व खाने की उत्तम सुविधा प्रदान करने हेतु न्यास अपना सहयोग विश्राम सदन चलाकर दे रहा है। इन विश्राम सदनों के माध्यम से कुल 2521 लोगों के रहने की व्यवस्था देने में न्यास सफल हो रहा है। अस्पताल के तनावपूर्ण वातावरण में रहने को विवश इन लोगों के मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान भी न्यास विभिन्न गतिविधियाँ चलाते हुए रख रहा है। विश्राम सदनों की संचालन समितियों का सदन की सुविधाओं को अतिउत्तम रखने का प्रयास रहता है। वे कामना करते हैं कि रोगी स्वस्थ होकर शीघ्र ही घर वापिस जाएँ।

इन विश्राम सदनों द्वारा गत मास में की गई कुछ प्रमुख गतिविधियाँ :

दिल्ली विश्राम सदन

योगिनी एकादशी का पावन आयोजन



"सेवा ही परमो धर्म" के पावन ध्येय को चरितार्थ करते हुए विश्राम सदन में योगिनी एकादशी के शुभ अवसर पर भक्ति, आस्था तथा सेवा-भाव से परिपूर्ण धार्मिक आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर संपूर्ण विश्राम सदन भक्ति और आध्यात्मिक चेतना से अनुप्राणित दिखाई दिया।

योगिनी एकादशी सनातन धर्म की अत्यंत पवित्र एवं पुण्यप्रद एकादशियों में गिनी जाती है। विश्राम सदन में निवास कर रहे रोगियों एवं उनके परिजनों के लिए इस विशेष आयोजन किया गया, जिससे उन्हें आध्यात्मिक संबल तथा मानसिक शांति प्राप्त हो सके। आयोजन का शुभारंभ भगवान श्रीहरि विष्णु के पूजन तथा दीप प्रज्वलन से हुआ। तत्पश्चात भजन-कीर्तन का आरंभ हुआ, जिसमें रोगियों, उनके परिजनों तथा उपस्थित जनों ने पूर्ण श्रद्धा के साथ सहभागिता की। इस अवसर पर विश्राम सदन को पुष्पों एवं रंग-बिरंगे गुब्बारों से सुंदर रूप से सजाया गया। सजावट की मनोहारी छटा ने संपूर्ण परिसर को उत्सवमय स्वरूप प्रदान किया।

विश्राम सदन में श्रीसुन्दरकाण्ड पाठ का पावन आयोजन

"सेवा ही परमो धर्म" के दिव्य ध्येय को आत्मसात् करते हुए 25 जुलाई को विश्राम सदन में श्रीरामभक्त हनुमान जी की कृपा प्राप्ति तथा समस्त रोगियों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना से श्रीसुन्दरकाण्ड पाठ का पावन आयोजन किया गया। इस अवसर पर संपूर्ण विश्राम सदन भक्ति, श्रद्धा तथा आध्यात्मिक चेतना से आलोकित हो उठा। सनातन परंपरा में श्रीसुन्दरकाण्ड का विशेष महत्त्व है।

प्रातःकाल से ही विश्राम सदन में भक्तिमय वातावरण विद्यमान था। विश्राम सदन में निवास कर रहे रोगियों, उनके परिजनों, सेवाभावी कार्यकर्ताओं तथा आगंतुकों ने अत्यंत श्रद्धा और एकाग्रता के साथ पाठ में सहभागिता की।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

प्रत्येक मंगलवार श्रीहनुमान चालीसा सामूहिक पाठ



सदन में प्रत्येक मंगलवार परम श्रद्धा, भक्ति एवं आस्था के साथ श्रीहनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ संपन्न होता है। इस पावन आयोजन में सदन में निवासरत रोगी एवं उनके परिजन/सहयोगी उत्साहपूर्वक सहभागिता कर आध्यात्मिक ऊर्जा एवं दिव्य प्रेरणा का लाभ प्राप्त करते हैं।

गुरुदक्षिणा उत्सव का आयोजन



सदन परिसर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बाल एवं तरुण शाखा के संयुक्त तत्वावधान में श्री गुरुदक्षिणा उत्सव श्रद्धा, अनुशासन एवं उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस पावन आयोजन में बाल एवं तरुण शाखा के लगभग 27 स्वयंसेवकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। गुरुदक्षिणा उत्सव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की परंपरा का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम है। यह उत्सव परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरु मानकर उसके प्रति श्रद्धा, समर्पण एवं कृतज्ञता की भावना व्यक्त करने का पावन अवसर प्रदान करता है। गुरुदक्षिणा के माध्यम से स्वयंसेवक राष्ट्रसेवा, चरित्र-निर्माण तथा संगठन-सुदृढ़ीकरण के संकल्प को पुनः दृढ़ करते हैं। कार्यक्रम का संपूर्ण आयोजन अनुशासन, गरिमा एवं आत्मीय वातावरण में संपन्न हुआ। सभी स्वयंसेवकों ने पूर्ण श्रद्धा एवं समर्पण-भाव से गुरुदक्षिणा अर्पित कर राष्ट्र, समाज एवं संस्कृति के प्रति अपने दायित्वों के निर्वहन का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर ने उपस्थित स्वयंसेवकों में संगठन के आदर्शों, सेवा-संस्कारों तथा राष्ट्रनिष्ठ जीवन-मूल्यों के प्रति नवचेतना एवं प्रेरणा का संचार किया।

विश्राम सदन, झज्जर, हरियाणा



विश्राम सदन झज्जर की गतिविधियां जुलाई मास में विशेष रही। इस मास के पहले सप्ताह में इस्कॉन की टीम प्रत्येक मास की भांति इस मास भी बड़ा ही मनमोहक भजन संध्या लेकर आई और लगभग 200-250 रोगियों और उनके सहयोगियों को ईश्वर की भक्ति से आत्मसात किया। उनका महाप्रसाद सभी रोगियों और उनके सहयोगियों ने बड़े चाव के साथ ग्रहण किया। हमेशा की भांति अमन भाटिया और सुनील जी के भजन लोगों को शान्ति प्रदान करते रहे।

भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा गुरुग्राम के 40 सदस्य श्री अनिल बंसल जी के नेतृत्व में सदन दर्शन की योजना से आए और बड़ा ही सुंदर और मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। विश्राम सदन में दी जाने वाली सुविधाओं को उन्होंने सराहा और भविष्य में हर संभव मदद का आश्वासन दिया। यहां चल रहे पुस्तकालय की उन्होंने भूरी भूरी प्रशंसा की। यहां रह रहे रोगियों से भी उन्होंने बातचीत की।

सदन में रहने वाले बच्चों को लेकर इस महीने अलग-अलग गतिविधियाँ की गईं। योग का एक सेशन उनके लिए अलग से डिजाइन किया गया, जिसकी प्रस्तुति उन्होंने मंच पर संगीत के साथ की। उनकी प्रतिभा की सभी ने सराहना की।

मुंशी प्रेमचंद जी की जयंती के शुभ अवसर पर बच्चों के बीच में कथा कथन प्रतियोगिता का आयोजन विश्राम सदन में किया गया। इसमें 15 से 20 बच्चों ने मुंशी प्रेमचंद जी की विभिन्न कथाओं को मंच से अपने शब्दों और भाव भंगिमा के साथ मनमोहक अंदाज में सुनाया जिसे सुनकर लोग बड़े ही प्रभावित हुए। बच्चों को छोटी-छोटी कहानियों की पुस्तक भी विश्राम सदन की तरफ से उपहार स्वरूप दी गईं। इस अवसर पर राष्ट्रीय कैंसर संस्थान के समाज कल्याण अधिकारी श्री विवेक कुमार, श्री मुश्ताक अहमद, व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पुस्तकालय में भी इस मास में बच्चों की संख्या बहुत अधिक रही। बच्चे और अन्य लोग भी पुस्तकालय में सामान्यतः पुस्तक पढ़ते दिखे।









हिंदी को राजभाषा बनाने में पुरुषोतम दास टंडन ने दिया था योगदान

पुरुषोतम दास टंडन का जन्म 1 अगस्त 1882 को इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में हुआ था। 1908 में इलाहाबाद हाई कोर्ट में वकालत शुरू की। 1921 में स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के लिए वकालत छोड़ दी। असहयोग आन्दोलन और नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। वह हिंदी भाषा को भारतीय समाज को एकजुट करने का एक प्रभावी साधन मानते थे। 1910 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में उन्होंने हिंदी को भारत की एकमात्र राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन किया। वह संविधान सभा के सदस्य भी रहे थे। 1961 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।



यूपी ने करके दिखाया

शक्ति से समृद्धि



1 करोड़+ ग्रामीण महिलाएं स्वयं सहायता समूह से आत्मनिर्भर

लखपति दीदी योजना
18.55 लाख+
महिलाएं बनीं लखपति

विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली



भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित 'अक्षय सेवा प्रकल्प' लोगों को प्रतिदिन निशुल्क खाना वितरित करता है। यहाँ एकदम घर जैसे स्वाद वाला खाना मिलता है। यहाँ वितरित होने वाले खाने की गुणवत्ता बढ़ाते हुए पिछले कुछ महीनों से दाल चावल के साथ एक सब्जी का वितरण भी प्रारम्भ किया गया है। इस कदम का अनेक महानुभावों ने स्वागत किया है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में स्थित एम्स, सफदरजंग, राममनोहर लोहिया और लेडी हार्डिंग अस्पताल अच्छे उपचार के लिए सबसे प्रसिद्ध अस्पतालों में से हैं। यहाँ दूर-दराज से लोग अपना उपचार करवाने के लिए आते हैं। जो लोग बाहर से आते हैं, उन्हें खाने पीने की बहुत समस्या होती है। अतः न्यास पिछले 8 वर्षों से लोगों को भोजन वितरित कर रहा है। प्रतिदिन लगभग 1500 लोगों को इस सेवा का लाभ मिलता है।

अनेक समाजसेवी भोजन वितरण के लिए यहाँ आते रहते हैं। इस मास में भी अनेक युवा समाजसेवी एवं अस्पताल के चिकित्सा कर्मी भी भोजन वितरण करने के लिए उपस्थित हुए।

SURYA

हर पल बढ़ती ज़िंदगी के साथ

घर हो या ऑफिस, बड़े प्रोजेक्ट से लेकर सार्वजनिक जगहों तक, सूर्या के प्रोडक्ट्स आज हर किसी की ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हमारे प्रोडक्ट्स की बड़ी रेंज व्यवसाय को बेहतर चलाने एवं शहरों के विकास में मुख्य रूप से अपनी भूमिका निभा रही है। व्यावहारिक, भरोसेमंद और विश्वसनीय, सूर्या बदलती दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए प्रतिबद्ध है।



SURYA HAI TOH BHAROSA HAI

Lighting | Wires and Cables | Professional Lighting | Fans | Appliances | Water Pumps | PVC and Water Tanks | Steel Pipes



I am SURYA

50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

SURYA ROSHNI LIMITED | consumercare@surya.in | www.surya.co.in

TOLL FREE 1800 102 5657

परमवीर चक्र विजेता सेनानी (क्रमशः)

सेवा का परम साधन है स्वयं के प्राण देकर देश व समाज की सेवा। अपने देश के जांबाज सैनिक ऐसी ही उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तो उनको दिया जाने वाला कोई भी सम्मान उनके सेवा कार्य की बराबरी नहीं कर सकता। परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च शौर्य सैन्य अलंकरण है जो दुश्मनों की उपस्थिति में उच्च कोटि की शूरवीरता एवं त्याग के लिए प्रदान किया जाता है।

परमवीर चक्र विजेता - मेजर रामास्वामी परमेश्वरन (1988)



मेजर रामास्वामी परमेश्वरन, (13 सितंबर 1946, मुंबई - 25 नवंबर 1987, श्रीलंका) भारतीय सेना के एक अधिकारी थे जिन्होंने श्रीलंका सिविल वॉर के दौरान अपनी बहादुरी के लिए मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकरण परमवीर चक्र प्राप्त किया। मेजर परमेश्वरन को 16 जनवरी 1972 को लघु सेवा आयोग द्वारा सेना की 15 बटालियन महार रेजिमेंट में सम्मिलित किया गया था।

जीवन परिचय

मेजर रामास्वामी परमेश्वरन का जन्म 13 सितम्बर 1946 में बम्बई में हुआ था। सेना में अधिकारी के रूप में वह महार रेजिमेंट में 16 जनवरी, 1972 को आए थे। उन्होंने मिजोरम तथा त्रिपुरा में युद्ध में भाग लिया था। वह अपने स्वभाव में अनुशासन तथा सहनशीलता के कारण बहुत लोकप्रिय अधिकारी थे और उन्हें उनके साथी 'पेरी साहब' कहा करते थे।

सैन्य जीवन तथा सर्वोच्च बलिदान

भारत की सेनाओं ने हमेशा युद्ध के लिए हथियार नहीं उठाए बल्कि ऐसा भी मौका आया, जब उसकी भूमिका विश्व स्तर पर शांति बनाए रखने की रही। श्रीलंका में ऐसे ही उदाहरण के साथ भारत का नाम जुड़ा हुआ है। विस्तृत इतिहास के बीच एक प्रसंग ऑपरेशन पवन का है, जो 1987 से 1990 तक श्रीलंका में चला, जिसमें भारतीय सेना के वीर मेजर रामास्वामी परमेश्वरन ने शांति विरोधी तत्वों के हाथों अपने प्राण गँवाए और देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

25 नवंबर 1987 को भारतीय शांति रक्षा सेना (IPKF) के तहत तैनात मेजर रामास्वामी परमेश्वरन जब श्रीलंका में रात में देर से सर्च ऑपरेशन से लौट रहे थे, तो उनकी टुकड़ी पर आतंकवादियों के एक समूह ने हमला किया था। हाजिर जवाबी के साथ, गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने आखिरी सांस तक अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाना जारी रखा। इस झड़प में पांच आतंकवादी मारे गए और तीन राइफलें और दो रॉकेट लांचर बरामद किए गए।

सम्मान

मेजर रामास्वामी परमेश्वरन को उनके बहादुरी भरे देश सेवा के कार्य के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 1988 में उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया जो 25 नवम्बर 1987 से प्रभावी हुआ।

देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ



देवड़े नेत्र चिकित्सालय भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित एक ऐसा उपक्रम है जिसमें नेत्र सम्बंधित समस्त रोगों का अति आधुनिक तरीके से उपचार अत्यंत अल्प व्यय में किया जाता है। यहाँ उपलब्ध सुविधाएँ हैं : फेको विधि द्वारा मोतिअबिंद ऑपरेशन; कंप्यूटराइज्ड नेत्र-परीक्षण; अत्याधुनिक OCT मशीन द्वारा पर्दे एवं सबलबाई की जॉच; कांटेक्ट लेंस; सबलबाई काला/मोतिया (ग्लूकोमा) की जांच एवं उपचार; नाखूना (Pterygium) एवं Chalazion ऑपरेशन; पलक सम्बन्धी रोगों का ऑपरेशन; और समस्त नेत्र-रोगों का आधुनिक मशीनों द्वारा जांच एवं उपचार। समय – प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक और स्थान है : C5/1, रिवर बैंक कॉलोनी, लखनऊ-226018.

यह प्रकल्प समय-समय पर गाँवों में नेत्र-शिविरों का आयोजन भी करता रहता है। इसी कड़ी में देवड़े नेत्र चिकित्सालय द्वारा दिनांक 19 जुलाई को इंजीनियरिंग



कॉलेज जानकीपुरम लखनऊ में नेत्र शिविर लगाकर 145 व्यक्तियों का सफल नेत्र परीक्षण किया गया। नेत्र शिविर कैम्प का उदघाटन डायरेक्टर आईटी प्रोफेसर वीरेंद्र पाठक जी ने किया। इस नेत्र शिविर में संघ के क्षेत्र व्यवस्था प्रमुख श्री जय प्रकाश जी, एंडोक्राइनोलॉजिस्ट डॉ सुशील उपाध्याय जी, डेंटल प्रोफेसर - डॉ मनोज उपाध्याय जी, प्रोफेसर विनोद उपाध्याय जी, डायटीशियन श्रीमती कल्पना मिश्रा जी तथा देवड़े नेत्र चिकित्सालय के कर्मचारी उपस्थित रहे। नेत्र शिविर में कुल नेत्र परीक्षण – 145 हुए, कुल उपनेत्र (चश्मा) – 118 वितरित किए गए और 7 व्यक्तियों में मोतियाबिंद की पहचान की गई। कॉलेज की संचालन समिति ने न्यास के कार्यकर्ताओं का इस सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया।

रविशंकर शुक्ल ने हिंदी में संविधान लिखने पर दिया था जोर

रविशंकर शुक्ल का जन्म 2 अगस्त 1877 को मध्यप्रदेश के सागर में हुआ था। पेशेवर जीवन की शुरुआत वकालत से की और स्वतन्त्रता संग्राम में भी सक्रिय भूमिका निभाई। 1946 में संविधान सभा के सदस्य बन हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए जोरदार प्रयास किए। इतिहासकार पद्मश्री ग्रानविल आस्टिन ने उन्हें संविधान सभा के हिंदी समर्थक समूह के प्रमुख नेताओं में से एक माना था। उन्होंने मध्य प्रान्त विधान सभा की एक विशेष समिति का नेतृत्व करते हुए संविधान सभा में हिंदी में संविधान लिखने पर जोर दिया था। उन्होंने उर्दू के विरुद्ध आक्रामक अभियान भी चलाया।

महामना शिक्षण संस्थान

महामना शिक्षण संस्थान की स्थापना वर्ष 2019 में लखनऊ में की गई। इस प्रकल्प का उद्धेश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के होनहार बालक-बालिकाओं को 11वीं-12वीं की पढ़ाई के साथ मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश प्राप्ति के योग्य बनाना है। इसके लिए उन्हें होस्टल की सुविधा के साथ-साथ, पढ़ने, खाने-पीने आदि की सारी सुविधाएँ बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराई जाती है। किसी कॉलेज में प्रवेश पाने के पश्चात उनकी फीस इत्यादि की व्यवस्था भी संस्थान करता है।

मानव मूल्यों एवं सर्वांगीण विकास पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

ज्ञान, संस्कार, सेवा और व्यक्तित्व विकास के समन्वय से विद्यार्थियों को मिला प्रेरक मार्गदर्शन

महामना शिक्षण संस्थान द्वारा विद्यार्थियों में मानव मूल्यों, भारतीय ज्ञान परंपरा, सेवा भावना, राष्ट्रचेतना तथा सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की भावना विकसित करने के उद्देश्य से "मानव मूल्य एवं सर्वांगीण विकास" विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन CSIR तथा NBRI (राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ) के सौजन्य से किया गया।



सर्वप्रथम विद्यार्थियों ने उद्यान का भ्रमण कर प्रकृति, पर्यावरण और वनस्पति जगत के विविध पक्षों को समझा। इसके पश्चात कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बच्चों द्वारा प्रस्तुत कुलगीत और छात्रों द्वारा संस्थान के प्रकल्प का परिचय एवं प्रस्तुतीकरण कार्यक्रम के प्रारंभिक आकर्षण रहे। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए न्यास के सचिव एवं प्रबंध न्यासी श्री राहुल सिंह जी दिल्ली से आये थे।



उद्घाटन सत्र में संघ के वरिष्ठ अखिल भारतीय कार्यकर्ता मा. स्वांत रंजन जी ने "महामना जी—एक विलक्षण शिक्षाविद" विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के जीवन, शिक्षा के प्रति उनके समर्पण तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में चरित्र, संवेदना और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी है।

इसके बाद मा. अनिल जी, क्षेत्र प्रचारक, पूर्वी उत्तर प्रदेश ने "नर सेवा नारायण सेवा" विषय पर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने सेवा को भारतीय जीवन-दृष्टि का महत्वपूर्ण आधार बताते हुए कहा कि समाज के जरूरतमंद और वंचित वर्ग के प्रति संवेदनशील होना ही सच्चे अर्थों में मानवता की पहचान है।

द्वितीय सत्र में प्रो. एम.पी. गुप्ता जी, निदेशक, IIM लखनऊ ने "एआई युग एवं भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर अत्यंत उपयोगी एवं समसामयिक विचार रखे। उन्होंने आधुनिक तकनीकी युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बढ़ती भूमिका के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

तृतीय सत्र में प्रो. दुर्ग सिंह चौहान जी ने "समग्र व्यक्तित्व विकास" विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने व्यक्तित्व निर्माण में अनुशासन, आत्मविश्वास, समय प्रबंधन, व्यवहार, नेतृत्व क्षमता और सकारात्मक दृष्टिकोण की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक सफलता तक सीमित न रहकर अपने व्यक्तित्व के प्रत्येक पक्ष के विकास के लिए निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा दी।

विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता रही कार्यशाला की विशेषता

कार्यशाला की सबसे उल्लेखनीय विशेषता विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता रही। प्रत्येक सत्र में विद्यार्थियों ने केवल श्रोता के रूप में भाग नहीं लिया, बल्कि प्रस्तुतीकरण, प्रश्नोत्तर और संवाद के माध्यम से अपनी प्रतिभा एवं जिज्ञासा का परिचय दिया। इससे उनमें अभिव्यक्ति कौशल, तार्किक चिंतन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता विकसित करने का अवसर मिला।





प्रथम सत्र के पश्चात संस्थान के प्रथम बैच के विद्यार्थियों द्वारा, द्वितीय सत्र के बाद संस्थान के द्वितीय एवं तृतीय बैच के विद्यार्थियों द्वारा और तृतीय सत्र के पश्चात संस्थान के चतुर्थ एवं पंचम बैच के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए और विभिन्न विषयों पर संवाद किया।

समापन सत्र में मा. डॉ. कृष्णगोपाल जी ने समापन उद्बोधन एवं आशीर्वचन प्रदान किए। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में ज्ञान के साथ संस्कार, सेवा, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति दायित्वबोध को अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समाज में जो प्रतिभा और मेधा है, वह उपेक्षित न रहे और योग्य विद्यार्थियों को उचित अवसर प्राप्त हो—इसी उद्देश्य से ऐसे प्रयास निरंतर किए जाने चाहिए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शीला मिश्रा जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्र गीत "वन्दे मातरम्" के सामूहिक गायन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

शिक्षा से संस्कार और संस्कार से राष्ट्र निर्माण

"मानव मूल्य एवं सर्वांगीण विकास" कार्यशाला ने यह संदेश दिया कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह ज्ञान के साथ संस्कार, संवेदना, सेवा और उत्तरदायित्व का भाव भी विकसित करे। महामना

शिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित यह कार्यशाला विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय जीवन-मूल्यों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रही। कार्यशाला में महामना जी के आदर्श, नर सेवा-नारायण सेवा, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं एआई, समग्र व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों को एक साथ जोड़कर विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और व्यक्तित्वगत विकास की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत की गई। यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए केवल एक दिवसीय कार्यक्रम नहीं, बल्कि जीवन को उद्देश्यपूर्ण, संस्कारित और राष्ट्रहित में समर्पित बनाने की प्रेरणा देने वाला अनुभव बनकर सामने आया।

नवीन सत्र के विद्यार्थियों का भव्य स्वागत समारोह

महामना शिक्षण संस्थान (बालक/बालिका प्रकल्प) के नवीन सत्र 2026-27 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के स्वागत एवं पुरातन छात्रों के सम्मान में 19 जुलाई 2026 को लखनऊ में एक भव्य एवं प्रेरणादायी स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ हवन पूजन से हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य नए विद्यार्थियों का आत्मीय स्वागत करने के साथ-साथ उन्हें संस्थान की कार्यपद्धति, उद्देश्य, संस्कार एवं जीवन-दृष्टि से परिचित कराना भी था।







संस्थान के परिचय एवं गतिविधियों पर आधारित वीडियो प्रस्तुति के पश्चात पूर्व-विद्यार्थियों द्वारा अपने अनुभव साझा किए गए। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा अतिथियों का परिचय एवं स्वागत किया गया। श्री आदित्य जी ने संस्थान के उद्देश्य, कार्यप्रणाली एवं भविष्य की योजनाओं से दर्शकों को परिचित कराया।

समारोह के सारस्वत अतिथि प्रो. जे.पी. सैनी जी ने शिक्षा के महत्व तथा विद्यार्थी जीवन में ज्ञान के साथ संस्कारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को निरंतर अध्ययन, अनुशासन और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा दी।

इसके पश्चात प्रो. अरुण मोहन शौरी जी ने मुख्य अतिथि के रूप में विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने बदलते समय में शिक्षा की भूमिका, ज्ञान-विज्ञान के महत्व तथा विद्यार्थियों के समक्ष उपस्थित नई संभावनाओं और चुनौतियों पर अपने विचार रखे। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा का पूर्ण उपयोग करते हुए देश और समाज के लिए उपयोगी बनने का संदेश दिया।



कार्यक्रम में श्री प्रमोद तिवारी जी, संरक्षक, महामना शिक्षण संस्थान द्वारा प्रशस्ति-पत्र वितरण एवं प्रतिभा सम्मान का कार्यक्रम संपन्न हुआ। विद्यार्थियों की उपलब्धियों का सम्मान उनके लिए उत्साहवर्धक रहा तथा नवीन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना।

समारोह के मुख्य वक्ता मा. डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा को समाज के सहयोग से आगे बढ़ाने की गौरवशाली परंपरा रही है। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रतिभाशाली किन्तु आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों की शिक्षा में समाज को अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्थिक अभाव किसी प्रतिभा के विकास में बाधा नहीं बनना चाहिए। समाज के सक्षम लोगों द्वारा ऐसे विद्यार्थियों की शिक्षा का दायित्व उठाना वास्तव में राष्ट्र के भविष्य को मजबूत करने का कार्य है। उन्होंने महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की शिक्षा-दृष्टि का स्मरण करते हुए शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का प्रभावी माध्यम बताया। डॉ. कृष्ण गोपाल जी ने विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय जीवन-मूल्यों से जुड़ने का संदेश देते हुए कहा कि ज्ञान तभी सार्थक है, जब वह व्यक्ति को समाज के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार बनाए। उन्होंने विद्यार्थियों से परिश्रम, अनुशासन, सेवा एवं राष्ट्रभक्ति को अपने जीवन का आधार बनाने का आह्वान किया।



कार्यक्रम के अध्यक्षीय सत्र में प्रो. दुर्ग सिंह चौहान जी ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन प्रदान किए। उन्होंने विद्यार्थी जीवन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यही समय व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण की आधारशिला रखने का है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहने तथा जीवन में निरंतर सीखते रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शीला मिश्रा जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का समापन छात्राओं द्वारा 'वन्दे मातरम्' की भावपूर्ण प्रस्तुति के साथ हुआ।

महामना शिक्षण संस्थान में पौधारोपण एवं छात्र संवाद कार्यक्रम

महामना शिक्षण संस्थान में 23 जुलाई को पौधारोपण एवं छात्र संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में न्यास के माननीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश गोयल जी का सान्निध्य विद्यार्थियों को प्राप्त हुआ। उनके कर-कमलों से संस्थान परिसर में रुद्राक्ष के पौधे का रोपण किया गया। पौधारोपण के पश्चात श्री ओमप्रकाश गोयल जी ने कक्षा 11वीं एवं 12वीं के विद्यार्थियों के साथ आत्मीय संवाद किया। उन्होंने विद्यार्थियों से उनके अध्ययन का लक्ष्य, रुचियों और भविष्य की योजनाओं से संबंधित

विभिन्न विषयों पर चर्चा की। विद्यार्थियों ने भी बेझिझक अपनी जिज्ञासाएं एवं प्रश्न उनके समक्ष रखे, जिनका उन्होंने सहज, सरल और प्रभावी ढंग से समाधान किया। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता किसी एक दिन के प्रयास से नहीं मिलती, बल्कि उसके पीछे कठिन परिश्रम, अनुशासन, निरंतर प्रयास और अपने लक्ष्य के प्रति अटूट समर्पण की भूमिका होती है।



दिनॉक 23 जुलाई को बालिका प्रकल्प में बाल गंगाधर तिलक जी की जयंती मनाई गई। बालिकाओं द्वारा इनके जीवन पर प्रकाश डाला गया। बालिका प्रकल्प की प्रमुख श्रीमती सरोज तिवारी ने बताया तिलक स्वराज के पहले और सबसे मजबूत अधि वक्ताओं में से एक थे और मराठी में उनके उद्धरण के लिए जाने जाते थे।



दिनॉक 26 जुलाई को बालिका प्रकल्प में कारगिल विजय दिवस मनाया गया। कारगिल युद्ध में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई उनके समक्ष दीपक जलाकर उन्हें नमन किया गया बालिका प्रकल्प की प्रमुख डॉक्टर सरोज तिवारी ने बताया कि यह दिन 1999 के कारगिल युद्ध में भारत की जीत और भारतीय सैनिकों के अदम्य साहस, शौर्य एवं बलिदान की याद में मनाया जाता है। बालिकाओं ने इस अवसर पर कारगिल विजय के पेंटिंग बनाए। कार्यक्रम का समापन शांति मंत्र के साथ हुआ।



दिनांक 29 जुलाई को महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प में गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया गया। महर्षि वेदव्यास जी के जयंती के अवसर पर महर्षि वेदव्यास जी के चित्र को लगाकर उनके समक्ष दीपक प्रज्ज्वलित कर तथा पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभी बालिकाओं ने इस अवसर पर गुरु के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

1984 मेसी और रोनाल्डो की टक्कर के फुटबालर हैं सुनील छेत्री

फुटबालर सुनील छेत्री का जन्म सिकन्दराबाद में हुआ था। वे 2005 में भारतीय फ़ुटबाल टीम में शामिल हुए। 2008 के एएफसी चैलेंज कप में चार गोल दागकर भारतीय फ़ुटबाल के पोस्टर ब्वाय बन गए। 2010 में, अमेरिका की मेजर लीग साकर में कैनसस सिटी विजाड्स के लिए हस्ताक्षर कर किसी विदेशी लीग में खेलने वाले तीसरे भारतीय फुटबालर बने। 151 मैचों में 94 गोल कर वह रोनाल्डो, मेसी व अली डेई के बाद अंतरराष्ट्रीय फ़ुटबाल में चौथे सबसे बड़े गोल स्कोरर बन गए।

भाऊराव देवरस स्मृति छात्रवृत्ति-2026-27

समाज के आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग के शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए न्यास द्वारा प्रतिवर्ष योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। जम्मू-कश्मीर, लेह-लद्दाख, उत्तर पूर्वी राज्यों और वनवासी क्षेत्रों से पात्र विद्यार्थियों का चयन कर उन्हें यह छात्रवृत्ति दी जाती है ताकि ये विद्यार्थी धन के अभाव में अपनी शिक्षा को बीच में न रोक दें। वर्ष 2025-26 में कक्षा एक से परास्नातक तक के कुल 248 विद्यार्थियों को लगभग 13.20 लाख रू की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों और छात्रों के बीच भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्यों और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देने वाले संस्थानों को रु 60 हजार की वित्तीय सहायता प्रदान की गई। 1995 में प्रारम्भ हुए इस प्रकल्प के माध्यम से अब तक लाभान्वित होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 2344 है जिन्हें न्यास द्वारा 1.26 करोड़ से अधिक की धनराशि वितरित की जा चुकी है।

न्यास का लक्ष्य वर्ष 2026-27 में लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने के साथ साथ छात्रवृत्ति की राशि बढ़ाना भी है। अतः आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि इस पुनीत कार्य में न्यास का सहयोग करें।

खाते की जानकारी - भारतीय स्टेट बैंक, भाऊराव देवरस सेवा न्यास,
खाता संख्या : 41171580896, IFSC - SBIN0013182.
कृपया राशि भेजने से पूर्व दूरभाष - 9811068375 पर संपर्क अवश्य करें।

प्रतापी राजा कृष्णदेव राय

महाराजा कृष्णदेव राय हिन्दू परम्परा का पोषण करने वाले लोकप्रिय सम्राट थे। उन्होंने अपने राज्य में हिन्दू एकता को बढ़ावा दिया। वे स्वयं वैष्णव पन्थ को मानते थे; पर उनके राज्य में सब पन्थों



के विद्वानों का आदर होता था। सबको अपने मत के अनुसार पूजा करने की छूट थी। उनके काल में भ्रमण करने आये विदेशी यात्रियों ने अपने वृत्तान्तों में विजयनगर साम्राज्य की भरपूर प्रशंसा की है। इनमें पुर्तगाली यात्री डोमिंगेज पेइज प्रमुख है। महाराजा ने अपने राज्य में आन्तरिक सुधारों को बढ़ावा दिया। शासन व्यवस्था तथा राजस्व व्यवस्था में सुधार कर उन्होंने राज्य को आर्थिक दृष्टि से सबल और समर्थ बनाया। विदेशी और विधर्मी हमलावरों से रक्षार्थ उन्होंने एक विशाल और तीव्रगामी सेना का निर्माण किया। इसमें सात लाख पैदल, 22,000 घुड़सवार और 651 हाथी थे। महाराजा कृष्णदेव राय को अपने शासनकाल में सबसे पहले बहमनी सुल्तान महमूद शाह के आक्रमण का सामना करना पड़ा। महमूद शाह ने इस युद्ध को 'जेहाद' कह कर सैनिकों में मजहबी उन्माद भर दिया, पर कृष्णदेव राय ने ऐसा भीषण हमला किया कि महमूद शाह और उसकी सेना सिर पर पॉव रखकर भागी। इसके बाद उन्होंने कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के मध्य भाग पर अधिकार कर लिया। महाराजा की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने जीवन में लड़े गये हर युद्ध में विजय प्राप्त की। महमूद शाह की ओर से निश्चिन्त होकर राजा कृष्णदेव राय ने उड़ीसा राज्य को अपने प्रभाव क्षेत्र में लिया और वहॉ के शासक को अपना मित्र बना लिया। 1520 में उन्होंने बीजापुर पर आक्रमण कर सुल्तान यूसुफ आदिलशाह को बुरी तरह पराजित किया। महाराजा के राज्य की सीमाएँ पूर्व में विशाखापट्टनम, पश्चिम में कोंकण और दक्षिण में भारतीय प्रायद्वीप के अन्तिम छोर तक पहुँच गयी थीं। उन्होंने विजयनगर में भव्य राम मन्दिर तथा हजार मन्दिर (हजार खम्भों वाले मन्दिर) का निर्माण कराया।

समर्थ भारत - दिल्ली

देवकी देवी जैन मेमोरियल कॉलेज फॉर विमेन, लुधियाना में फैशन डिज़ाइनिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ - 01 जुलाई - देवकी देवी जैन मेमोरियल कॉलेज फॉर विमेन, लुधियाना (पंजाब) में समर्थ भारत द्वारा फैशन डिज़ाइनिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक शुभारंभ किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 27 छात्राओं ने नामांकन कराया। यह प्रशिक्षण 01 जुलाई से 16 जुलाई तक संचालित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को फैशन डिज़ाइनिंग के विभिन्न व्यावहारिक एवं तकनीकी पहलुओं का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।



बाइक रिपेयरिंग प्रशिक्षण केंद्र, उत्तम नगर (बिंदापुर–मटियाला) - शुभारंभ – 08 जुलाई - समर्थ भारत एवं हिंदू जागरण मंच के संयुक्त सहयोग से उत्तम नगर (बिंदापुर–मटियाला), नई दिल्ली में बाइक रिपेयरिंग प्रशिक्षण केंद्र का सफल शुभारंभ किया गया। यह पहल युवाओं को तकनीकी कौशल प्रदान कर उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने कौशल विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में ऐसे प्रशिक्षण केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए।



श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी एवं समर्थ भारत के मध्य एमओयू हस्ताक्षर - 09 जुलाई - श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी (SVSU), पलवल एवं समर्थ भारत के मध्य युवाओं को जापान में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु कौशल प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट कार्यक्रम के संबंध में एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) हस्ताक्षर समारोह आयोजित किया गया। इस सहयोग का उद्देश्य भारतीय युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें जापान जैसे विकसित देश में रोजगार के अवसरों से जोड़ना है।



फैशन डिज़ाइन प्रशिक्षण केंद्र, विपिन गार्डन (उत्तम नगर) - शुभारंभ - 19 जुलाई - समर्थ भारत द्वारा उत्तम नगर स्थित विपिन गार्डन में फैशन डिज़ाइन प्रशिक्षण केंद्र का सफलतापूर्वक शुभारंभ किया गया। समाज के सहयोग से स्थापित यह केंद्र युवाओं एवं महिलाओं को कौशल आधारित

जुलाई 2025 में चले प्रशिक्षण कोर्स

KVIC द्वारा प्रमाणन हेतु संचालित प्रशिक्षण कोर्स

	प्रशिक्षण केंद्र	प्रशिक्षण	प्रशिक्षार्थी	प्रशिक्षण अवधि
1.	**पनवेल, मुम्बई**	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ कोर्स	20	15 जून – 14 जुलाई
1.	शकरपुर, DSEU, दिल्ली	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	25	20 अप्रैल – 13 जुलाई
2.	लुधियाना, पंजाब	ब्यूटिशियन	20	05 जून – 04 जुलाई
3.	ग्रीन पार्क, दिल्ली	बेकरी	20	15 मई – 14 जुलाई
4.	खोड़ा कॉलोनी	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	22	15 जुलाई – 14 सितम्बर
5.	कालका जी, दिल्ली	कटिंग एंड टेलरिंग	20	15 जून – 14 जुलाई
	कुल संख्या		127	

समर्थ भारत द्वारा प्रमाणन हेतु संचालित प्रशिक्षण कोर्स

6.	पटेल गार्डन, दिल्ली	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	15	15 अप्रैल – 14 जुलाई
7.	गोमती नगर, खरगपुर, लखनऊ	मोटर ड्राइविंग	05	16 जून – 07 जुलाई
8.	ओखला फेज-1, दिल्ली	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	20	01 जुलाई – 31 अगस्त
9.	तिहार जेल, दिल्ली	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	21	25 मई – 24 जुलाई
10.	वृन्दावन, मथुरा	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	22	04 मई – 04 जुलाई
11.	ओल्ड, सीमापुरी	ब्यूटिशियन	20	19 मई – 18 अगस्त
12.	पुल पहलादपुर – 1	ब्यूटिशियन	15	11 मई – 10 अगस्त
13.	पुल पहलादपुर – 2	फैशन डिजाइनिंग	10	11 मई – 10 अगस्त
14.	ग्रीन पार्क, दिल्ली	ब्यूटिशियन	16	01 जुलाई – 30 सितम्बर
15.	छावला, नाहरगढ़	ब्यूटिशियन	14	14 जून – 13 सितम्बर
16.	दुर्गा विहार, दिल्ली	ब्यूटिशियन	10	18 मई – 17 अगस्त
17.	कृष्णा कॉलोनी, दिल्ली	ब्यूटिशियन	13	15 मई – 14 अगस्त
18.	नांगलोई	ब्यूटिशियन	13	01 जुलाई – 30 सितम्बर
19.	विपिन गार्डन, द्वारका – 1	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	10	06 जुलाई – 05 अक्टूबर
20.	विपिन गार्डन, द्वारका – 2	फैशन डिजाइनिंग	08	26 जुलाई – 25 अक्टूबर
21.	तिलक नगर, दिल्ली	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	12	01 जुलाई – 31 अगस्त
22.	SOL केशवपुरम, दिल्ली	ब्यूटिशियन	08	15 जुलाई – 14 अक्टूबर
23.	SOL केशवपुरम, दिल्ली	नेल आर्ट	04	15 जुलाई – 14 अगस्त
24.	शकरपुर, DSEU, दिल्ली	ए सी, रेफ्रीजरेटर और आर ओ	17	20 जून – 19 अगस्त
25.	महारानी बाग, DSEU, दिल्ली	ब्यूटिशियन	07	16 मई – 15 अगस्त
26.	नरसिंह पुर (APML), गुरुग्राम	ट्रक रिपेयरिंग	13	10 मई – 09 अगस्त
27.	शांति नगर, जयपुर	ब्यूटिशियन	07	01 अप्रैल – 30 जुलाई
28.	शांति नगर, जयपुर	फैशन डिजाइनिंग	05	01 अप्रैल – 31 जुलाई
29.	जवाहर नगर, जयपुर	ब्यूटिशियन कोर्स	02	01 अप्रैल – 31 जुलाई
30.	जवाहर नगर, जयपुर	फैशन डिजाइनिंग	11	01 मार्च – 31 जुलाई
31.	गोमती नगर (लखनऊ)	फैशन डिजाइनिंग	24	20 मई – 19 अगस्त
32.	गोमती नगर, फैजुलागंज, लखनऊ	ब्यूटिशियन	17	20 अप्रैल – 19 जुलाई
33.	रोहनिया, काशी	ब्यूटिशियन	04	03 जून – 02 दिसम्बर
34.	रविन्द्रपुरी, काशी	ब्यूटिशियन	06	03 जून – 02 दिसम्बर
35.	देवकी देवी जैन कॉलेज, लुधियाना	फैशन डिजाइनिंग	27	01 जुलाई – 16 जुलाई
	कुल संख्या		376	

इस माह प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों की कुल संख्या **503**

प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर एवं स्वरोजगार के लिए सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस केंद्र की स्थापना में बजरंग दल के कार्यकर्ताओं, विभिन्न सामाजिक संगठनों एवं सीए अमोद जी का विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

ट्रक मैकेनिक प्रशिक्षण केंद्र, नरसिंहपुर - प्रेरणादायी संवाद – 15 जुलाई - समर्थ भारत के ट्रक मैकेनिक प्रशिक्षण केंद्र, नरसिंहपुर में अग्रवाल पैकर्स एंड मूवर्स लिमिटेड के मालिक, सेवा भारती दिल्ली के अध्यक्ष एवं समर्थ भारत के संरक्षक आदरणीय श्री रमेश अग्रवाल जी का शुभ आगमन हुआ। इस अवसर पर श्री रमेश अग्रवाल जी ने प्रशिक्षार्थियों से आत्मीय संवाद करते हुए ऑटोमोबाइल उद्योग में उपलब्ध रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों, तकनीकी शिक्षा के महत्व तथा कौशल विकास की आवश्यकता पर अपने प्रेरणादायी विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि कौशल ही युवाओं की सबसे बड़ी पूंजी है, जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ सफल एवं सम्मानजनक करियर की दिशा में अग्रसर करता है।

प्रमाण पत्र वितरण

RACW प्रशिक्षण केंद्र, DSEU – डॉ. बी.आर. अंबेडकर कैंपस, शकरपुर - प्रमाण पत्र वितरण - 11 जुलाई 2026 - समर्थ भारत द्वारा DSEU – डॉ. बी.आर. अंबेडकर कैंपस, शकरपुर (दिल्ली) के सहयोग से संचालित RACW (रेफ्रिजरेटर, ए.सी., वॉशिंग मशीन एवं RO रिपेयर) प्रशिक्षण के प्रथम बैच के प्रशिक्षार्थियों हेतु प्रमाण पत्र वितरण समारोह का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम युवाओं को कौशल आधारित शिक्षा एवं रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा। इस अवसर पर श्रीमती रेनू चौधरी जी (पार्षद, पटपड़गंज) एवं श्री सुनील जी (समाजसेवी) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने प्रशिक्षार्थियों को उनके सफल प्रशिक्षण हेतु बधाई देते हुए तकनीकी कौशल, आत्मनिर्भरता एवं निरंतर सीखने के महत्व पर अपने प्रेरणादायी विचार साझा किए। समारोह में प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने वाले सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उनके समर्पण, अनुशासन एवं मेहनत की सराहना करते हुए उज्ज्वल भविष्य एवं सफल करियर की शुभकामनाएँ दी गईं।

RACW प्रशिक्षण केंद्र, तिलक नगर - प्रथम बैच का प्रमाण पत्र वितरण समारोह - 15 जुलाई - स्वर्गीय श्री बलदेव राज अरोड़ा जी की पावन स्मृति में संचालित समर्थ भारत प्रशिक्षण केंद्र, तिलक नगर में RACW प्रशिक्षण के प्रथम बैच का सफलतापूर्वक समापन एवं प्रमाण पत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम में समर्थ भारत के प्रांत सह-संयोजक श्री राकेश जी, अरोड़ा एंटरप्राइजेज एवं तिलक नगर केंद्र प्रमुख श्री अतुल अरोड़ा जी, कीर्ति नगर केंद्र प्रमुख श्री आदर्श जी तथा केशवपुर विभाग संयोजक श्री उमेश जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

बेकरी प्रशिक्षण केंद्र, ग्रीन पार्क - प्रमाण पत्र वितरण समारोह - 19 जुलाई - समर्थ भारत के ग्रीन पार्क केंद्र में संचालित बेकरी प्रशिक्षण के प्रथम बैच के प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर प्रमुख समाजसेविका एवं दानदाता श्रीमती इन्दु सोढ़ी जी, श्री योगेश जी, श्री सतीश जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के दौरान सभी अतिथियों ने प्रशिक्षार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं। प्रशिक्षार्थी श्रीमती निरुपमा जी ने प्रशिक्षण पूर्ण होते ही "Bakes & Bites by Neeru" नाम से अपना ऑनलाइन बेकरी व्यवसाय प्रारंभ कर दिया।

जागरूकता ही है बचाव का रास्ता
सुरक्षित स्कूली वाहन
पहली प्राथमिकता

शैक्षणिक सत्र में सुरक्षित स्कूली वाहनों से हो विद्यार्थियों का आवागमन



प्रदेश के सभी विद्यालयों के प्रबंधकों से अपील

- स्कूल वाहन चालकों का चरित्र सत्यापन तथा नियमित स्वास्थ्य परीक्षण
- 12 वर्ष तक के विद्यार्थियों के परिवहन में प्रयुक्त स्कूल वाहनों में एक परिचारक/परिचारिका की अनिवार्यता
- वाहन के सुरक्षा मानकों, प्राथमिक चिकित्सा किट, अग्निशमन यंत्र, इमरजेंसी अलार्म आदि उपकरणों की प्रतिमाह हो जांच
- स्कूल वाहनों की फिटनेस, परमिट, बीमा एवं अन्य आनुषंगिक प्रपत्रों की वैधता की नियमित जांच तथा अनफिट वाहनों का बहिष्कार



याद रखिए, छात्रों की सुरक्षा के लिए स्कूल वाहन चालकों द्वारा यातायात नियमों का पालन तथा अभिभावकों एवं स्कूली प्रबंधन की सजगता अत्यंत आवश्यक है।

परिवहन हेल्पलाइन
149 | 1800-1800-151

मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076

सुरक्षित बचपन-विकसित उत्तर प्रदेश

विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
परिवहन विभाग, उत्तर प्रदेश

श्रीविष्णु : लोकमंगल, करुणा और धर्मपालन के आदर्श

"स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।"

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को महान विभूतियों के चरित्र से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। भारतीय ज्ञान-परम्परा में त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु और महेश—सृष्टि के क्रमशः सृजन, पालन तथा संहार के द्योतक हैं। पुराणों में अनेक स्थलों पर यह संकेत मिलता है कि इन पदों पर कभी स्वयं परब्रह्म परमात्मा प्रतिष्ठित होते हैं और कभी उनके द्वारा नियुक्त दिव्य जीव। जब स्वयं परमात्मा पालन-शक्ति के रूप में प्रकट होते हैं, तब उन्हें महाविष्णु कहा जाता है। श्रीमद्भागवत में भगवान विष्णु को समस्त चराचर जगत के पालनकर्ता, धर्म के संरक्षक तथा भक्तवत्सल ईश्वर के रूप में निरूपित किया गया है।

शिक्षा मुख्यतः दो प्रकार से प्राप्त होती है - चरित्र से और वाणी से। भगवान विष्णु का सम्पूर्ण जीवन और उनके विविध अवतार मानवता के लिए आचरण-प्रधान शिक्षा के अनुपम स्रोत हैं। वे आनन्दस्वरूप, पूर्णकाम और सर्वसमर्थ होते हुए भी अपने लिए कुछ नहीं चाहते; वे केवल प्राणिमात्र के कल्याण, धर्म की रक्षा और दुःखों के निवारण के लिए बार-बार अवतार धारण करते हैं। मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि - इन दशावतारों का मूल उद्देश्य लोकमंगल और धर्मसंस्थापन ही है।

भगवान विष्णु के चरित्र का एक अत्यन्त प्रेरणादायक प्रसंग महर्षि भृगु की परीक्षा से सम्बन्धित है। एक बार महर्षि भृगु ने ब्रह्मा, शिव और विष्णु—तीनों की परीक्षा लेने का निश्चय किया। जब वे भगवान विष्णु के समीप पहुँचे, तब उन्होंने उनके वक्षस्थल पर चरण-प्रहार कर दिया। सामान्यतः ऐसी स्थिति में क्रोध उत्पन्न होना स्वाभाविक था, किन्तु भगवान विष्णु तत्काल उठकर महर्षि के चरण पकड़ लेते हैं और अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहते हैं—"भगवन्! आपके चरण अत्यन्त कोमल हैं, कहीं मेरे कठोर वक्ष से आपके चरणों में पीड़ा तो नहीं पहुँची? यदि कोई अपराध हुआ हो तो मुझे क्षमा करें।" इस अद्वितीय विनय, क्षमा, सहिष्णुता और करुणा को देखकर महर्षि भृगु भावविह्वल हो उठे और उन्होंने विष्णु को सर्वोच्च करुणामूर्ति के रूप में स्वीकार किया। यह प्रसंग हमें सिखाता है कि महानता का वास्तविक मापदण्ड शक्ति नहीं, बल्कि विनम्रता और क्षमाशीलता है।

भगवान विष्णु केवल अपने चरित्र से ही नहीं, अपितु अपनी दिव्य वाणी से भी समस्त जगत का मार्गदर्शन करते हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्माजी ने जगत की रचना के पूर्व भगवान विष्णु का ध्यान किया। तब भगवान ने उन्हें परम तत्त्व का उपदेश दिया, जिसे भागवत का मूल ज्ञान माना जाता है। इस उपदेश में ब्रह्म, माया, जीव, जगत तथा भक्ति के रहस्यों का निरूपण है। यही ज्ञान आगे चलकर श्रीमद्भागवत के रूप में सम्पूर्ण मानवता के लिए आध्यात्मिक आलोक का स्रोत बना।

भगवान विष्णु का सम्पूर्ण व्यक्तित्व यह संदेश देता है कि परोपकार, दया, क्षमा, विनय, धर्मपालन और लोकमंगल ही जीवन के सर्वोच्च मूल्य हैं। वेदों का सार भी यही है कि मनुष्य अपने जीवन को केवल स्वार्थ तक सीमित न रखकर समष्टि के कल्याण के लिए समर्पित करे। भगवान विष्णु इसी आदर्श के साकार स्वरूप हैं।

आज के युग में जब समाज को सहिष्णुता, सद्भाव, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा की सर्वाधिक आवश्यकता है, तब भगवान विष्णु का चरित्र हमारे लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत है। उनके जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि वास्तविक नेतृत्व अधिकार से नहीं, बल्कि सेवा, करुणा, विनम्रता और धर्मनिष्ठ आचरण से प्रतिष्ठित होता है। यही भगवान विष्णु का सनातन संदेश है और यही भारतीय ज्ञान-परम्परा का अमूल्य आदर्श भी।

- श्री सत्यप्रकाश मिश्र

हिन्दू जीवन पद्धति का क्रमबद्ध स्वरूप (क्रमशः)

आरती का महत्व

आरती सनातन संस्कृति का वह अमूल्य उपहार है जो आस्था के धागे में विज्ञान को पिरोकर हमारे सामने रखता है। भले ही हमारे पूर्वज इसके वैज्ञानिक कारणों को विस्तार से न समझा पाए हों, लेकिन उन्होंने इसे परंपरा का हिस्सा बनाकर यह सुनिश्चित कर दिया कि आने वाली पीढ़ियां मानसिक रूप से शांत, शारीरिक रूप से स्वस्थ और सामाजिक रूप से संस्कारी बनी रहें। आरती केवल ईश्वर की वंदना नहीं, बल्कि समूचे वातावरण और मानव जीवन के शुद्धीकरण का एक अचूक विज्ञान है।

भारतीय सनातन परंपरा में आरती केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि यह श्रद्धा, मनोविज्ञान, स्वास्थ्य और विज्ञान का एक अद्भुत संगम है। अनादि काल से चली आ रही यह परंपरा हमारे दैनिक जीवन से लेकर विशेष संस्कारों (जैसे विवाह, स्वागत या विदाई) तक गहराई से जुड़ी हुई है। आइए आरती के अर्थ, उसके महत्व, सामाजिक औचित्य और इसके पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों को विस्तार से समझते हैं।

1. आरती का अर्थ और भाव

'आरती' शब्द संस्'आरात्रिक' शब्द से बना है। इसका एक अन्य संधि-विच्छेद 'आ + रति' भी है आ का अर्थ है- पूरी तरह से या विशेष रूप से और रति का अर्थ है- प्रेम, अनुराग या डूब जाना। अर्थात, जब हम देव पूजन के लिए, अपने आराध्य, किसी अतिथि या प्रियजन के प्रति अपने संपूर्ण प्रेम और श्रद्धा को समर्पित कर देते हैं, तो वह भाव 'आरती' कहलाता है।

तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका में लिखा है कि आरती का वास्तविक उद्देश्य मन के विकारों को शांत करना और ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट करना है। आरती करते समय भक्त का भाव यह होता है कि "हे प्रभु! मेरा जो कुछ भी है, वह आपका ही दिया हुआ है, और मैं इसे आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।"

2. आरती का सामाजिक एवं व्यावहारिक औचित्य

सनातन परंपरा में आरती देवताओं की ही नहीं, बल्कि इंसानों (जैसे दूल्हा, अतिथि, संतान या बुजुर्गों) की भी उतारी जाती है। इसके पीछे गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं:

सकारात्मक ऊर्जा का संचार (नजर उतारना): जब कोई व्यक्ति बाहर से यात्रा करके आता है, या दूल्हा विवाह के लिए आता है, तो लोक-परंपरा में माना जाता है कि उसे बाहरी दुनिया की नकारात्मक ऊर्जा या 'नजर' लग सकती है। आरती के दीपक और थाली को क्लॉकवाइज (घड़ी की सुई की दिशा में) घुमाकर उस नकारात्मक ऊर्जा के घेरे को तोड़ा जाता है।

कृतज्ञता और सम्मान: विदाई के समय या आगमन पर आरती उतारना सामने वाले व्यक्ति के प्रति अगाध आदर और स्नेह प्रकट करने का माध्यम है। यह हमारे 'अतिथि देवो भवः' के संस्कार को जीवंत करता है।

मानसिक एकाग्रता: दैनिक पूजा के अंत में आरती करने का औचित्य यह है कि यदि पूजा के दौरान हमारा मन कहीं भटक गया हो, तो आरती के समय बजने वाले शंख, घंटी और मंत्रों से मन पुनः एक जगह केंद्रित हो जाए।

3. आरती की वैज्ञानिकता (The Science behind Aarti)

हमारे ऋषियों-मुनियों ने जिन परंपराओं को धर्म से जोड़ा, उनके पीछे गहरा वैज्ञानिक और स्वास्थ्य संबंधी आधार था। आरती की वैज्ञानिकता को हम निम्नलिखित बिंदुओं से समझ सकते हैं:

(क) प्रकाश और तरंगों का विज्ञान (Optics & Vibrations) : आरती की थाली को हमेशा भगवान या व्यक्ति के चारों ओर वृत्ताकार (Circular Motion) घुमाया जाता है। विज्ञान के अनुसार, वृत्ताकार गति से एक विशेष प्रकार का ऊर्जा क्षेत्र (Energy Field) या 'ऑरा' निर्मित होता है। यह गति व्यक्ति के चारों ओर स्थित चुंबकीय क्षेत्र को संतुलित करती है।

(ख) कपास, घी और कपूर का रसायन (Chemical Benefits) : आरती में मुख्य रूप से गाय के शुद्ध घी या कपूर का उपयोग किया जाता है। कपूर (Camphor): कपूर को जलाने से हवा में मौजूद सूक्ष्म हानिकारक जीवाणु, बैक्टीरिया और वायरस नष्ट हो जाते हैं। कपूर की महक फेफड़ों को साफ करती है और श्वसन तंत्र को मजबूत बनाती है।

गाय का घी: गाय के घी का दीपक जलने से वातावरण में ऑक्सीजन का स्तर सुधरता है और हवा शुद्ध होती है। यह एक प्राकृतिक 'एयर प्यूरीफायर' की तरह काम करता है।

(ग) ध्वनि तरंगों का प्रभाव (Sound Resonance) : आरती के दौरान शंख, घंटी, झांझ और घड़ियाल बजाए जाते हैं। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि पीतल और कांसे से बनी घंटियों की ध्वनि से 'अल्फा तरंगें' (Alpha Waves) उत्पन्न होती हैं। यह ध्वनि हमारे मस्तिष्क के दाएं और बाएं हिस्से को संतुलित करती है।

शंख की ध्वनि से निकलने वाली तरंगें पर्यावरण में मौजूद हानिकारक तरंगों को नष्ट कर देती हैं और मन को तनावमुक्त (Stress-free) करती हैं।

(घ) पंचतत्वों का संतुलन (Balancing Five Elements) : आरती की थाली में प्रकृति के पंचतत्व मौजूद होते हैं:

1. पृथ्वी (चंदन, फूल, थाली)
2. जल (आचमन का जल)
3. अग्नि (दीपक या कपूर)
4. वायु (धूप का धुआँ)
5. आकाश (घंटी और शंख की ध्वनि)

जब ये पांचों तत्व एक साथ मिलते हैं, तो पूजा स्थल पर एक अत्यंत शक्तिशाली और सकारात्मक 'इको-सिस्टम' बनता है, जो वहाँ उपस्थित लोगों के स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति को सुदृढ़ करता है।

4. आरती के बाद की जाने वाली प्रक्रिया का महत्व

आरती पूरी होने के बाद हम दोनों हाथों से आरती लेते हैं और सिर पर हाथ फेरते हैं। इसके पीछे भी विज्ञान है। दीपक की लौ के ऊपर हाथ रखने से हथेलियों के एक्यूप्रेशर पॉइंट्स सक्रिय होते हैं और हल्की गर्मी से रक्त संचार बढ़ता है। जब हम उन हाथों को अपनी आंखों और सिर से लगाते हैं, तो वह दिव्य ऊष्मा और कपूर-घी के औषधीय गुण हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं।

पावन स्मृति

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।









दिनांक	दिवस	महापुरूषों का नाम
1 अगस्त 1913	पुण्य तिथि	उपन्यासकार : बाबू देवकीनन्दन खत्री
1 अगस्त 1882	जन्म-दिवस	स्वतन्त्रता सेनानी पुरुषोत्तमदास टंडन
3 अगस्त 1886	जन्म-दिवस	राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त
3 अगस्त 1915	जन्म-दिवस	हिंदी साहित्य के अग्रणी कवि - शिवमंगल सुमन
4 अगस्त 1906	जन्म-दिवस	हिमाचल के गौरव : डा. यशवन्त सिंह परमार
8 अगस्त 1509	राज्याभिषेक	प्रतापी राजा कृष्णदेव राय
8 अगस्त 1930	जन्म-दिवस	दो महावीर चक्र विजेता विंग कमांडर जग मोहन नाथ
10 अगस्त 1925	शौर्य दिवस	काकोरी में क्रांतिकारियों ने ट्रेन रोककर ब्रिटिश खजाना लूटा
10 अगस्त 1972	जन्म-दिवस	कारगिल युद्ध के वीर बलिदानी मेजर मरियप्पन सरवनन
11 अगस्त 1908	बलिदान	अमर बलिदानी खुदीराम बोस
12 अगस्त 1919	जन्म-दिवस	महान वैज्ञानिक : डा. विक्रम साराभाई
13 अगस्त 1638	जन्म-दिवस	मारवाड़ का रक्षक वीर दुर्गादास राठौड़
13 अगस्त 1854	जन्म-दिवस	सदगुरु श्री टेम्बे महाराज
14 अगस्त 1905	जन्म-दिवस	स्वतन्त्रता सेनानी श्री एन एम आर सुब्बरामन
15 अगस्त 1872	जन्म-दिवस	स्वतन्त्रता के उद्घोषक श्री अरविन्द
16 अगस्त 1886	पुण्य-तिथि	रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि
16 अगस्त 1904	जन्म-दिवस	सुभद्रा कुमारी चौहान : खूब लड़ी मर्दानी की लेखिका
16 अगस्त 2018	पुण्य-तिथि	न्यास के संस्थापक अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी
17 अगस्त 2007	पुण्य-तिथि	आधुनिक भगीरथ दशरथ मांझी
17 अगस्त 1849	बलिदान	वजीर रामसिंह पठानिया
17 अगस्त 1909	बलिदान	अमर बलिदानी मदनलाल धींगड़ा
18 अगस्त 1700	जन्म-तिथि	अपराजेय नायक: पेशवा बाजीराव
19 अगस्त 1928	जन्म-दिवस	उत्तम साहित्य के प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदी
20 अगस्त 2004	पुण्य-तिथि	इतिहासकार गंगाराम सम्राट्
20 अगस्त 1856	जन्म-दिवस	महान संत एवं समाजसुधारक - नारायण गुरू
21 अगस्त 1948	बलिदान-दिवस	शोएबुल्लाह का बलिदान
22 अगस्त 1933	जन्म-दिवस	संकल्प के धनी डॉ जगमोहन गर्ग
23 अगस्त 1998	पुण्य-तिथि	संगठन के मर्मज्ञ: श्री माधवराव देवड़े
25 अगस्त 2007	पुण्य-तिथि	राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि
26 अगस्त 1941	बलिदान-दिवस	हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानी: पुरुषोत्तम जी ज्ञानी
27 अगस्त 1993	पुण्य-तिथि	बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री प्रताप नारायण जी
27 अगस्त 1923	जन्म-दिवस	वचन के धनी शारदाचरण जोशी
29 अगस्त 1905	जन्म-तिथि	हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द

प्रेरणास्पद भारतीय व्यक्तित्व (वर्तमान)



3 अगस्त 1984	जन्म-दिवस	विश्वप्रसिद्ध भारतीय फुटबॉलर सुनील छेत्री
6 अगस्त 1956	जन्म-दिवस	पानीबाबा : राजेन्द्र सिंह
7 अगस्त 1955	जन्म-दिवस	मधुर आवाज के धनी - सुरेश वाडकर
10 अगस्त 1993	जन्म-दिवस	प्रसिद्ध भारतीय जिमनास्ट दीपा कर्माकर
11 अगस्त 2008	विजय-दिवस	प्रथम व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा - शूटर
19 अगस्त 1994	जन्म-दिवस	भारतीय स्केटिंग चैंपियन व विश्व रिकॉर्डधारी - सर्वेश आमटे
23 अगस्त 2023	इसरो दिवस	भारत के चंद्रयान-3 द्वारा चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग
20 अगस्त 1946	जन्म-दिवस	इन्फोसिस के संस्थापक श्री एन आर नारायणमूर्ति
29 अगस्त 1949	जन्म-दिवस	इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ के. राधाकृष्णन

'पानीबाबा' : राजेन्द्र सिंह

आज सम्पूर्ण विश्व जल-संकट की गंभीर चुनौती का सामना कर रहा है। जनसंख्या वृद्धि, अंधाधुंध भूजल दोहन, जलस्रोतों का प्रदूषण तथा पर्यावरण के प्रति बढ़ती उपेक्षा के कारण नदियाँ, तालाब और कुएँ सूखते जा रहे हैं। हिमालय के हिमनद सिकुड़ रहे हैं और अनेक सदानीरा नदियों का प्रवाह भी प्रभावित हुआ है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते जल-संरक्षण नहीं किया गया, तो भविष्य में जल ही सबसे बड़ा वैश्विक संकट बन सकता है। जिस भारत में जलदान को महादान माना जाता था, वहीं आज पीने का जल भी अनेक स्थानों पर मूल्य देकर खरीदना पड़ रहा है।

ऐसे समय में जल-संरक्षण को जन-आंदोलन का स्वरूप देने वाले व्यक्तित्व हैं राजेन्द्र सिंह, जिन्हें पूरा देश श्रद्धापूर्वक 'पानीबाबा' के नाम से जानता है। उनका जन्म 6 अगस्त 1959 को उत्तर प्रदेश के बागपत जनपद (तत्कालीन मेरठ जनपद) के दाउला ग्राम में हुआ। आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात वे समाजसेवा के उद्देश्य से राजस्थान पहुँचे, जहाँ उनके जीवन की दिशा ही बदल गई।

छात्र जीवन में वे जयप्रकाश नारायण के विचारों से अत्यंत प्रभावित थे। वर्ष 1975 में उन्होंने अपने साथियों के साथ 'तरुण भारत संघ' की स्थापना की। अलवर जिले के एक गाँव में भ्रमण के दौरान एक वृद्ध ने उनसे कहा—"यदि सचमुच गाँव का विकास करना चाहते हो, तो भाषण नहीं, फावड़ा उठाओ और गाँव में पानी लाओ।" यह वाक्य उनके जीवन का संकल्प बन गया।

राजेन्द्र सिंह ने ग्रामीणों के सहयोग से वर्षाजल-संचयन की परम्परागत भारतीय पद्धतियों को पुनर्जीवित किया। उन्होंने हजारों जोहड़ों, तालाबों और जल-संरचनाओं का निर्माण एवं पुनरुद्धार कराया। इसके परिणामस्वरूप राजस्थान के अलवर तथा आसपास के क्षेत्रों में भूजल स्तर उल्लेखनीय रूप से बढ़ा और वर्षों से सूखी पड़ी अरवरी, रूपारेल, सरसा, भगाणी तथा जहाजवाली जैसी अनेक नदियाँ पुनः प्रवाहित होने लगीं।

इस जल-क्रांति का प्रभाव केवल जल उपलब्धता तक सीमित नहीं रहा। अकाल और बेरोजगारी के कारण पलायन कर चुके लोग अपने गाँव लौटने लगे। कृषि उत्पादन बढ़ा, पशुपालन सुदृढ़ हुआ, वनस्पति और जैव-विविधता का विकास हुआ तथा ग्रामीणों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में

व्यापक सुधार आया। यह सिद्ध हो गया कि स्थानीय समाज की सहभागिता और पारम्परिक भारतीय ज्ञान परम्परा के आधार पर भी स्थायी विकास संभव है।

राजेन्द्र सिंह के कार्यों का प्रभाव इतना व्यापक हुआ कि देश-विदेश के शोधकर्ता, पर्यावरणविद् और नीति-निर्माता उनके कार्यों का अध्ययन करने आने लगे। उन्हें 2001 का रेमन मैगसेसे पुरस्कार, 2015 का स्टॉकहोम वाटर प्राइज़ सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए। उनके कार्यों का अवलोकन करने के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति के. आर. नारायणन भी अलवर पहुँचे थे।

यह सफलता उन्हें सहज नहीं मिली। प्रशासनिक बाधाएँ, भूमाफियाओं का विरोध, अनेक मुकदमे और व्यक्तिगत हमले—इन सबका उन्होंने धैर्यपूर्वक सामना किया। किन्तु उनका अटूट संकल्प और जनसहभागिता के प्रति विश्वास हर कठिनाई पर भारी पड़ा।

आज भी 'पानीबाबा' राजेन्द्र सिंह देश-विदेश में जल-संरक्षण, नदी पुनर्जीवन तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए जनजागरण कर रहे हैं। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि यदि समाज संगठित होकर प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने का संकल्प ले, तो सूखी धरती भी पुनः हरित हो सकती है। जल की प्रत्येक बूँद का संरक्षण ही आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य का आधार है।

अमर बलिदानी खुदीराम बोस



भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास में अनेक कम आयु के वीरों ने भी अपने प्राणों की आहुति दी है। उनमें खुदीराम बोस का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है। उन दिनों अनेक अंग्रेज अधिकारी भारतीयों से बहुत दुर्व्यवहार करते थे। ऐसा ही एक मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड उन दिनों मुज्जफरपुर, बिहार में तैनात था। वह छोटी-छोटी बात पर भारतीयों को कड़ी सजा देता था। अतः क्रान्तिकारियों ने उससे बदला लेने का निश्चय किया। कोलकाता में प्रमुख क्रान्तिकारियों की एक बैठक में किंग्सफोर्ड को यमलोक पहुँचाने की योजना पर गहन विचार हुआ। उस बैठक में खुदीराम बोस भी उपस्थित थे। यद्यपि उनकी अवस्था बहुत कम थी; फिर भी उन्होंने स्वयं को इस खतरनाक कार्य के लिए प्रस्तुत किया। उनके साथ प्रफुल्ल कुमार चाकी को भी इस अभियान को पूरा करने का दायित्व दिया गया। योजना का निश्चय हो जाने के बाद दोनों युवकों को एक बम, तीन पिस्तौल तथा 40 कारतूस दे दिये गये। कुछ दिन तक दोनों ने किंग्सफोर्ड की गतिविधियों का अध्ययन किया। इससे उन्हें पता लग गया कि वह प्रतिदिन शाम को लाल रंग की बग्घी में क्लब जाता था। 30 अप्रैल, 1908 को दोनों क्लब के पास की झाड़ियों में छिप गये। अचानक एक लाल बग्घी क्लब से निकली। वे पीछे से बग्घी पर चढ़ गये बम दाग दिया। परन्तु दुर्भाग्य की बात कि किंग्सफोर्ड उस दिन क्लब आया ही नहीं था। उसके जैसी ही लाल बग्घी में दो अंग्रेज महिलाएँ वापस घर जा रही थीं जो यमलोक पहुँच गयीं। पुलिस ने चारों ओर जाल बिछा दिया। उसने प्रफुल्ल को पकड़ना चाहा; पर प्रफुल्ल ने पिस्तौल से स्वयं को गोली मारकर अपना बलिदान दे दिया। खुदीराम भी पकड़े गए और मुकदमे में उन्हें फाँसी की सजा घोषित की गयी। 11 अगस्त 1908 को 18 साल 8 महीने और 8 दिन की आयु में हाथ में गीता लेकर खुदीराम हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गये।

राहत टैक्स से फ्रीडम इंटरेस्ट से

नागरिकों के लिए सुनहरा मौका



अवधि
15 अगस्त से 15 दिसंबर, 2026 तक

नगर निकायों में लंबित संपत्ति कर
(गृहकर/जलकर/सीवर-कर) हेतु
एकमुश्त समाधान योजना (ओ.टी.एस.)

पूरा बकाया भुगतान करने पर ब्याज एवं सरचार्ज में मिलेगी
100% छूट

ऑनलाइन तथा ऑफलाइन
दोनों माध्यमों से आवेदन की सुविधा

बकाया संपत्ति कर के भुगतान के लिए
अधिकतम **3 किस्तों** की सुविधा

बकाया राशि का **1/3 हिस्सा** 30 दिनो मे और शेष **2/3 हिस्सा**
दो मासिक किस्तों मे जमा करने की सुविधा

1 अप्रैल, 2026 तक लंबित सभी प्रकार की
संपत्तियों के कर पर मिलेगा **OTS का लाभ**



OTS अपनाएं ब्याज में पूरी राहत पाएं

अपने नगर निकाय के कार्यालय आएं,
समय रहते OTS का लाभ उठाएं,
कर के बोझ से मुक्ति पाएं.

नगर विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

nagarvikas_up | UPNagarVikasVibhag | NagarVikas_UP | @NagarVikasVibhagUP

टोल फ्री नं. : 1533

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	जुलाई	अप्रैल 26 से
श्रद्धानगर बाबा का पुरवा	0	0
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	223	1022
बाबा विश्वनाथ आश्रम	91	270
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	93	304
माधवराव देवडे स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	460	1674
होम्योपैथिक	350	1234
आयुर्वेद	0	0
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	312	1335
कुल लाभान्वित रोगी	**1529**	**5835**

नेत्र चिकित्सा

विषय	देवडे नेत्र चिकित्सालय लखनऊ		अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान अयोध्या	
	जुलाई	योग-अप्रैल 26 से	जुलाई	योग-अप्रैल 26 से
नेत्र परीक्षण	501	2076	1535	5965
उपनेत्र (चश्मा) वितरण	207	872	1137	4410
निशुल्क उपनेत्र वितरण	0	0	59	185
मोतियाबिंद पहचान	18	70	45	189
मोतियाबिंद सर्जरी	0	18		
Fundus Test	190	667		
OCT Test	12	36		
LASER	5	14		
Pterygium/Gonioscopy	1	2		
पैथोलॉजी	38	107		
Foreign Body removal	4	8		

महामना शिक्षण संस्थान लखनऊ के विद्यार्थियों की जानकारी

		कुल चयनित	कोर्स किया	सफल विद्यार्थी IIT-JEE	सफल विद्यार्थी NEET	IIT-JEE	NEET
बालक	2019-2026 (6 बैच)	104	100	85	15	71	2
	2025-27	26	20	15	5		
	2026-28	31	21	19	2		
बालिकाएँ	2020-2026 (5 बैच)	61	54	35	19	15	0
	2025-27	12	11	7	4		
	2026-28	14	13	8	5		
	कुल योग	**248**	**219**	**169**	**50**	**86**	**2**

समर्थ भारत प्रकल्प, दिल्ली द्वारा चलाए जा रहे बैच की जानकारी

क्र.	ट्रेनिंग का नाम	जुलाई 2026 में पूर्ण बैच	प्रशिक्षक	प्रशिक्षार्थी	वर्ष 2026-27 (अप्रैल से अब तक) बैच	प्रशिक्षक	प्रशिक्षार्थी
1	ए.सी. - फ्रिज रिपेयरिंग	5	5	100	14	14	257
2	ब्यूटीशियन	1	1	20	9	9	158
3	नेल आर्ट				2	2	19
4	कारपेंटर (बढ़ई)				1	1	18
5	बेकरी	1	1	20	1	1	20
6	ट्रक रिपेयरिंग						
7	डिजिटल मार्केटिंग						
8	ए. अई. प्रांट इंजीनियरिंग						
9	जी. डी. ए.						
10	कटाई एंड टेलरिंग	1	1	27	2	2	45
11	विडियो एडिटिंग						
12	GST & Tally				1	1	77
13	वेल्डिंग						
14	मोटर ड्राइविंग	1	1	14	2	2	19
	कुल योग	**9**	**9**	**181**	**32**	**32**	**613**

विश्राम सदनों में जुलाई-2026 में आने वाले नए रोगी व सहाय

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम लखनऊ	KGMU लखनऊ	दिल्ली वि सदन	IGIMS पटना	एम्स झज्जर	MSVS ऋषिकेश	योग
1	जम्मू कश्मीर	0	0	5	0	19	0	24
2	हिमाचल प्रदेश	0	0	7	0	15	7	29
3	पंजाब/चंडीगढ़	3	0	22	0	26	10	61
4	हरियाणा	0	0	19	0	1385	10	1414
5	दिल्ली	7	2	9	1	366	22	407
6	उत्तराखंड	0	0	42	0	76	1073	1191
7	उत्तर प्रदेश	1720	1452	366	3	2079	2239	7859
8	बिहार	1345	142	389	2776	336	22	5010
9	झारखण्ड	121	19	54	17	20	5	236
10	सिक्किम	0	0	0	0	0	0	0
11	नागालैंड	0	0	0	0	0	0	0
12	असम	2	0	4	0	2	0	8
13	मणिपुर /मिजोरम	0	0	0	0	3	0	3
14	अरुणाचल प्रदेश	0	0	0	0	0	0	0
15	त्रिपुरा	0	0	4	0	0	4	8
16	मेघालय	0	0	4	0	0	0	4
17	प. बंगाल	16	0	56	10	40	8	130
18	ओडिशा/अंदमान	0	0	19	0	0	0	19
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना	0	0	3	0	4	0	7
20	तमिलनाडु/पुदुच्चेरी	0	0	0	0	0	0	0
21	कर्नाटक	0	0	0	0	0	0	0
22	केरल	0	0	6	0	0	0	6
23	महाराष्ट्र /गोवा/दमन	17	0	4	4	6	3	34
24	मध्य प्रदेश	67	12	81	0	90	1	251
25	छत्तीसगढ़	9	0	2	0	0	0	11
26	गुजरात	2	0	0	0	7	0	9
27	राजस्थान	0	20	38	0	123	11	192
पड़ोसी देश								
1	नेपाल	13	2	14	12	11	7	59
2	बांग्लादेश	0	0	0	0	0	0	0
3	अन्य देश	0	0	0	0	0	0	0
इस मास का योग		3322	1649	1148	2823	4608	3422	16972
योग (अप्रैल 25 - मार्च 26)		12758	6087	4551	10560	17190	13394	64540
इस मास में प्रतिदिन की औसत उपस्थिति		437	117	254	252	655	395	2110

RNIN-UPHIN/2005/15853 डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2024-2026 प्रेषित डाकघर : निराला नगर, लखनऊ
कैलेंडर वर्ष 2024-2026 प्रेषण तिथि : प्रत्येक माह की 27, 28, 29, 30 (कार्यदिवस)

महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प के भवन निर्माण हेतु आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प लखनऊ में वर्ष 2020 से निर्धन मेधावी छात्राओं को कक्षा 11 व 12 की पढ़ाई के साथ साथ IIT(JEE) और NEET की परीक्षा हेतु तैयारी कराने का कार्य कर रहा है। यहाँ उनकी पढ़ाई के साथ ही रहने व खाने पीने की सारी व्यवस्थाएँ निशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं। सफल छात्राओं की कॉलेज फीस की व्यवस्था भी न्यास के माध्यम से होती है।

इन छात्राओं की पढ़ाई व रहने की सुरक्षित व उचित व्यवस्था के लिए लखनऊ के अर्जुन गंज में एक भवन का निर्माण किया जा रहा है। इसका निर्माण कार्य अपने अंतिम चरण में है और न्यास का लक्ष्य है कि इसी वर्ष से बालिकाओं को यह भवन उपलब्ध हो सके। अंतिम चरण के समय धन की अत्यधिक आवश्यकता रहती है। अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपका सहयोग 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका सहयोग इस भवन निर्माण को समय से पूरा करने में सहायक होगा।

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :
CSR Registration under MCA : **CSR00004454**
80G Registration : **AAATB1049G25LK02**
12AA Registration : **AAATB1049G25LK01**
FCRA Registration : **136550134**

Bank Details
Bhaorao Deoras Seva Nyas
SBI A/C # 44372747291
IFSC : SBIN0003813

कृपया राशि भेजने के तुरंत बाद UTR#, अपना नाम, मोबाइल, PAN और पता - 96283 30347, 9450020514, bdsnyas@yahoo.co.in पर अवश्य भेजें ताकि आपकी 80G/CSR की रसीद भेजी जा सके।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प व संपर्क सूत्र

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
1. स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री देवेश रस्तोगी	9839197000
2. माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
3. विश्राम सदन, के.जी.एम.यू., लखनऊ	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	9415003111
4. विश्राम सदन, एम्स, दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
5. विश्राम सदन, आई.जी.आई.एम.एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
6. विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	डॉ अश्वनी खासा	9813088277
7. माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
8. देवड़े नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री अमित अग्रवाल	9838500708
9. अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006
10. अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
11. महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
12. महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	डॉ अनिमा जमवाल	9839582266
13. भाऊराव देवरस स्मृति छात्रवृत्ति	दिल्ली कार्यालय	9811068375
14. सामाजिक विज्ञान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
15. सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
16. सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
17. युवा साहित्यकार सम्मान	डॉ विजय कर्ण	8887671004
18. समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
19. भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
20. भाऊराव देवरस स्मृति सेवा सम्मान	दिल्ली कार्यालय	9811068375
21. भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यानमाला	दिल्ली कार्यालय	9811068375

न्यास पंजीकरण संख्या : IV/181/353-371/1513

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास C-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए
नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र (PRESS/2025/825/6693/00007428 - RNI),
संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004, दूरभाष - +91-6389500007, 9151522252 से मुद्रित,
भाऊराव देवरस सेवा न्यास, C-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी